ISBN: 978-81-974088-0-9

2. अंधत्व नहीं दिव्यत्व
(शैक्षिक एवं सामाजिक परिवेश में)

डॉ. पल्लवि. एन. कुलकर्णी

प्राध्यापक,
सुराणा महाविद्यालय,
बेंगलूरु -कर्नाटक,

प्रस्तावना:

मित्रों, एक सूरदास जो नेत्रहीन थे हिन्दी साहित्य में जिन्होने बंद आँखों से दुनिया देखी । सुन्दर-सुन्दरी, नदी-तालाब, कृष्ण-गोपिका, आदि न जाने क्या-क्या देखा है। भ्रमरगीत जैसे अद्भुत रचना से तो साहित्य को समृद्ध किया है । उसी समय जहाँ पर कोई सुविधा नहीं थी सूरदास जी अनेक रचनाएँ करते हुए समाज का दुत्कार सह लेते है ,अन्धत्व से विजय पा लेते है । यहाँ महाभारत के धृतराष्ट का जिक्र करना न भूलना चाहिए जो अपनी बन्द आँखों से अनेक विद्याएँ सीखी और राज्य किये थे । नेत्रहीनता आज नहीं सदियों से रही व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्या है, और अनेक व्यक्तियों ने उस पर विजय प्राप्त किया था । आज के आधुनिक समय में तो अनेक सुविधाएँ उपलब्ध है और अनेक साधक भी है जो अपनी कमजोरी पर विजय प्राप्त किए हुए है ।

आँखों से सबन्धित समस्यएँ - मानव जीवन में नेत्र बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । आँखों से संबधित समस्याओं को जल्दि से पहचानकर इलाज कराना अवश्यक है । नेत्रहीनता के अनेक कारण हो सकते है । अंधत्व संक्रमण, अनुवंशिकता, दुर्घटना या बीमारी की अन्य स्थितियों में होती है । अन्धत्व परिपूर्ण दृष्टिहीनता की स्थिति है । व्यक्ति की आँखे किसी भी प्रकार के रोशनी, रंग आदि को पहचान नहीं पाता है और इस स्ठिति में व्यक्ति परिपूर्ण अन्धत्व मेहसूस करता है । नेत्रहीनता की स्थिति में कुछ लोग जन्मान्ध होते है तो कुछ लोग समय या उम्र के साथ दृष्टि खो लेते है ।

मोतियाबिंदी आम तरह की आँखों की बीमारी है जो किसी को भी किसी भी उम्र में प्रभावित कर सकता है ।आँखों में प्राकृतिक रूप से लेन्स का धुंधला पड जाने से होता है । यह याहाँ तक कि चश्मा या लेन्स के पहनने से भी नजर धुंधला पड जाता है । यह मोतियाबिंदी धीरे-धीरे बढता जाता है । ग्लुकोमा नामक आँख संबन्धी बीमारी जिसका इलाज मुश्किल है और यह बढता ही जाता है । ग्लुकोमा को रोकने के लिए स्वास्थ वर्धक आहार और नियमित रूप से व्यायाम की जरूरत है । कुछेक लोगों को दृष्टि संबन्धी दोष जैसे दूर दृष्टि या निकट दृष्टि आदि जो आँखों में तनाव और सिरदर्द आदि आरोग्य संबन्धी समस्याएँ उत्पन्न करता है । चश्मा या लेन्स का उपयोग करते हुए इस प्रकार दोष निवारण हो सकता है ।

फ़्लेटर्स एक ऐसी दृष्य संबन्धी बीमारी है जिसमें आँख को भरनेवाली विट्रियस जेली की उम्र बढने या संभावित रूप से दृष्टि को खतरे में डालनेवाली समस्या जैसे रेटीना का फ़ट्ना या अलग होना आदि शिकायत होती है ।

आँखों का जलना भी दृष्टि संमन्धी बीमारी है । यह अलग-अलग कारणों से फ़ैल सकती है । नस संबन्धी बीमारी, आँखों से जलन या सूजन संबन्धी बीमारी भी है जो सुधार हो सकती है और जिसका निदान है । किसी भी प्रकार की नेत्र संबन्धी बीमारी हो आज के आधुनिक समय में इलाज संभव है ।

कानून की दृष्टि में परिपूर्ण नेत्रहीनों की सहायता के लिए और उनकी सुरक्षा के लिए १९३५ में युनाइटेड स्टेट्स, और कांग्रेस ने कानूनी तहत नेत्रहीनों के लिए विशेष कानून का निर्माण करती है । कुछ लोगों में रंगों के अंधापन रहता है, इसे वस्तविक रूप से अन्धत्व नहीं माना जाता है । कुछ लोग कम रोशनी की स्थिति में रात के वक्त देखने के लिए कठिनाई मेहसूस करते है, असल में इसे भी नेत्रहीनता नहीं माना जाता है ।अन्धत्व में और एक विधा भी है जिसे रन्नो ब्लाइंडनेस कहते है ।

इस स्थिति में व्यक्ति आकृतियों को, वस्तुओं को पहचानने में समर्थ रहता है । जिनकी आँखे कमजोर होती है और वह चश्मे के सहारे स्पष्ट देख पाता और उसे भी नेत्रहीन नहीं कहा जाता है । असल में दृष्टिहीनता के ९०% कारण संक्रमण, मोतियाबिन्दी, ग्लोकोमा, चोट और कोई भी चश्मा\न लगा पाने की स्थिति है । इस स्थिति में व्यक्ति की दृष्टि की अक्षमता की गिनती होती है ।

दृष्टिहीनता के कारण एक यह भी हो सकता है कि विटमिन ए की कमी नेत्रहीनता का बडा कारण है । इसे पोषण संबधी अन्धेपन कहते है । एक्रोमैटोप्मिया बीमारी में व्यक्ति रंग पहचान नहीं पाता है । रेटिनोपथी के अंधेपन डायबिटीज या बीपी जैसे बीमारियों की वजह से ही हो सकता है । कई प्रकार के अन्धेपन संक्रामिक रोगों से हो सकता है ।

शैक्षिक संबन्धी विचार - आज विकलांग तथा नेत्रहीन लोगों के लिए अलग सुविधाएँ उपलब्ध है । नेत्रहीन छात्रों के लिए अलग स्कूल ही बना रहता है लेकिन सभी बच्चे वैसे स्कूल में नहीं पढते है । कानूनी रूप से अंधे छात्र नारमल स्कूल में सभी बच्चों के साथ पढने के लिए भी मौका है । नारमल स्कूल में अक्सर ऐसे बच्चों के लिए अलग से सुविधा बनाई जाती है । नेत्रहीनों की पढाई में आनलाइन संसाधन काफ़ी महत्वपूर्ण है । पार्किस स्कूल फ़ार द ब्लाईंड, पाथ्स टू लिटरेसी, टेक्सास स्कूल फ़ार द ब्लाईड्स, तथा अनेक संघ संस्थान, सरकार द्वारा चलाई जानेवाली स्कूल्स भी काफ़ी मददगार है । मेरे छात्र सय्यद खिबलान जो दृष्टिहीन है उसके अनुसार " पढाई करने के लिए कक्षा पाठ के अलावा आज कल के आधुनिक इंटरने के साधन भी काफ़ी मददगार है । यू ट्युब की विडियो तथा आडियो सुनने से पढाई आसान हो जाती है । आनलाइन में अनुपलब्ध साधनों के लिए किसी अच्छे पढनेवाले छात्र से विनती करते है कि वे पढे और नेत्रहीन सुनकर उसका ग्रहण करते है "।

नेत्रहीन छात्रों की पढाई के लिए कक्षा में छात्रों को रोशनदार स्थान पर बिठाना है । जो कम मात्रा में देखते है जो लिख पाते है उनके लिए गहरे लाइनवाले कागज प्रदान करना है । नेत्रहीन छात्रों को भी सामन्य छात्रों के समान साथ-साथ शिक्षा देनी है । सामान्य रूप से ही असाइनमेंट परीक्षा, कक्षाकर्य तथा ग्रहकार्य आदि पूरा करने के लिए कहे । उनको स्वतंत्र रूप से सामस्या का निदान ढूंढने के लिए छोड देना है । नेत्रहीन छात्रों के साथ हमेशा सामान्य छात्रों जैसा ही व्यवहार करे । ब्राइल लिपि के माध्यम से विशेषज्ञों के सहारे सही तरीके से पढाने की अवश्यकता है । राष्ट्रीय शिक्षानीती यानी एन.ई.पी प्राद्योगिकी को एकीकृत करने की सलहा देती है, इसे अनुसार नेत्रहीनों के लिए भी उपयोगी बनाना है । यहाँ शैक्षिक सामग्री को छात्रों की व्यक्तिगत अवश्यकता के अनुकूल डालकर अधिक उपयोगी बनाना है । एन.ई.पी में डिजिटल सामग्रियों का संग्रह बनाने पर जोर दिया गया है ।

स्कूल तथा कालेज के स्तर में विकलांग संबधी सरकारी योजनाओं, अधिनियमों लाभ आदि को दृष्टि बाधित छात्रों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य हो जाना अवश्यक है। शिक्षा को प्रभावकारी बनाने के लिए विशेष उपकरणों, संसाधनों का उपयोग करना है । सरकार से उपलब्ध अनेक दिव्यांग कल्याण योजनाओं का उपयोग करना और जानकारी देना है । नेत्रहीनों को कंप्युटर इस्तमाल करने के लिए स्क्रीन टच स्क्रीन स्विच या विशेष साफ़्टवेर है । नेत्रहीन छात्रों के लिए एम. आई. टी ने वाईब्रेटिंग कियरेबल उपकरण विकसित किया है । अब दुनिया में ब्रेल स्मार्टवाच ने नेत्रेहीन लोगों को स्क्रीन पर संदेश महसूस करने में सक्षम है । ब्लाईंड पैड का टेबलेट दृष्टिबाधित लोगों के लिए दृष्य जानकारी को स्पर्शनीय बनाता है ।

दृष्टिबाधित बच्चे निश्चित रूप से अच्छी तरह से सीख सकते है लेकिन कुछ एक सुविधाओं से अंजान लोगों की पहुंच नहीं होती है । नेत्रेहीन बच्चों में उनका गन्ध तथा स्पर्श, स्वाद और श्रव्य इंद्रिय काफ़ी सचेत रहते है । उनको संवेदी शिक्षा दी जाती है, स्पर्श के माध्यम से वह वस्तुओं का यथा संभव अनुभव कर सकता है । उनके परिवारवाले मित्र तथा अन्यलोग संवेदी शिक्षा देने में मदद कर सकते है । जैसे फ़लों का गंध, खाने की खुशबू या कपडों के स्पर्श आदि का उदाहरण देते हुए सूंघने या स्पर्श के अनुभवों को कराई जा सकती है ।

एक और नेत्रहीन की शिक्षा की ओर माता-पिता तथा परिवार में जागरूकता बढ रही है, तो दूसरी ओर उनको गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा नहीं मिल रहा है । उनकी शिक्षा आधुनिक दुनिया की माँग पूरी करके तकनीकी व्यवस्था पूर्ण दुनिया में प्रतिस्पर्धा देने योग्य नेहीं बन रहे है । नेशनल फ़ेडरेशन आफ़ ब्लाईंड ने सभी अंधे बच्चों को ब्राइल शिक्षा देने के लिए समर्थन करती है । ऐसे बच्चों की शिक्षा के लिए केवल शिक्षक ही नहीं बल्कि अभिभावकों को भी ब्राइल सिखाने से घर में ही नेत्रहीन छात्र कुछ सीख भी सकते है । माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति सकारात्मकता रखने की अवश्यकता है ।

पार्किन्स स्कूल के शिक्षा के अनुसार नेत्रहीन बच्चों को पाँच तरीके से तय्यार करना चाहिए । जैसी विविध परिस्थितियों में समाज से जुडे रहने का निर्देश देना है । टहलते समय दिशा निर्देश पूछना हो तो उसके बाद मित्र या माता-पिता या किसी अन्य जन हो उनसे मदद लेने के बाद अभिवादन देना सिखाना है ।

एक नेत्रहीन बालक जो सामनेवाले को देख नहीं सकता इसीलिए संकेतों द्वारा सामनेवाले को कैसे समझाना है यह भी सिखाना अवश्यक है । उनको सामाजिक व्यवहारों में किसी से ऊंची आवाज में बात करना या साक्षात्कार् के समय मौखिक जवाब कैसे देने है आदि शामिल है । शिक्षकों के साथ मिलकर अपने व्यावसायिक कौशल को कैसे असरदार बनाना है और उसके लक्ष हासिल कैसे करना है इसके बारे में दिशा निर्देश करना है । कौशल नेत्रहीनों को यह भी सिखाता है कि कोई भी उनके साथ बात कर रहे है तो कहाँ देखना है या कैसे हाथ मिलाना है आदि तकी यह सामाजिक परिस्थितियों में मित्रों और परिजनों से प्रतिक्रिया करने के लिए अवश्यक है ।

सामाजिक सहारा - नेत्रहीन लोगों की पूर्व की स्थिति और आज की स्थिति में काफ़ी परिवर्तन आया है । जो पारिवारिक तथा माता-पिता द्वारा त्याग जाने की स्थिति आज नहीं है । पूर्व में अपने ही माता पिता परिवार, पडोसियों से घृणित होते थे । आज विशेष विकलांग या नेत्रेहीन लोगों का स्कूल तथा आश्रमों में उनका दाखिल कराते है और उनको सहारा देते है । अभिभावक अपने बच्चों से नियमित रूप से मिल रहे है और अपने बच्चों के लिए जिन संस्थानों का आश्रय लिए है उनसे निरंतर जुडे हुए है । पारिवारिक भेदभाव कम हो गया है । फ़िर भी कुछ लोग आज भी अन्धत्व को झोल रहे है । जैसे मेरे छात्र का कहना है कि "कुछ माता पिताएँ बचपन में अपने बच्चों को इस प्रकार के संस्था या आश्रम में सौंपकर जाते है तो वापस उनसे मिलने नहीं आते हैं । उन बच्चों को बुरा लगता है जब कुछ अभिभावक जो अपने बच्चों से नियमित रूप से मिलने आते"। ऐसी स्थिति में बच्चों की भावनाओं को समझना अवश्यक है । उनको संस्थाओं के शिक्षक, सहायक जन शिक्षा के साथ प्यार देना और उस कमी को मेहसूस होने ना देना भी अवश्यक है ।

मेरे छात्र सय्यद खिबलान से चर्चा करने से कुछेक सामाजिक विषयों की जानकारी मिली है , उसे इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते है । नेत्रहीनों का श्रव्य तथा स्पर्ष इंद्रीय काफ़ी तेज रहता है जिससे वे वस्तुओं को या कपडों को छूकर आसानी से उसे पहचान लेते है । रास्ता तय करते वक्त या बस या ट्रेन का सफ़र करते वक्त लोग उनकी काफ़ी मदद करने लगे है । कुछेक समय उनको बूरा अनुभव भी होता है जैसे कि ऐसे नेत्रहीन लोगों को देखकर कोई पैसे देने आते है उनके मना करने के बावजूद

भी देने की कोशिश करते है तब उनको बहुत ही अपमानजक होता है । वे भी औरों के समान आत्म निर्भर होकर आत्मविश्वास के साथ जीना चाहते है । जो जन्मान्ध होते है उनकी दृष्टि न रहने का हो या वस्तुओं को पहचानने में हो किसी भी प्रकार की असुविधा मेहेसूस नहीं होती है ताकी वे बचपन से ही वस्तुओं को छूकर या सूंघकर अनुभव केरने की आदत बनी रहती है। मनोरंजन के लिए भी सिनेमा या संगीत सुनकर उसका आनंद लेते है और दृष्य की कल्पना करते है और उनको कभी बुरा नहीं लगता है । बचपन में सहजरूप से उनको दूसरे बच्चों से छेड-छाड सहना पडा था और कुछ दिनों बाद वे सहज हो गये थे ।

सेवा संस्थान और अश्रमों का योगदान - नेत्रहीन बच्चों के सेवा संस्थान और स्कूलों में आम बच्चों के जैसे ही उनका दैनिक दिनचर्या भी रहता है जैसे कि सुबह की प्रार्थना से लेकर समय पर स्कूल-कालेज जाना खेल कूद, मनोरंजन आदि विषयों में हास्टेल में किसी भी प्रकार की भिन्नता नहीं है । संस्थान तथा वाहाँ के विशिष्ट कर्मचारी, प्राध्यापक आदि मिलकर उनका मनोबल बढाने का काम करते है । कभी भी वे नेत्रहीन लोगों को दूसरे बच्चों से कमजोर नहीं समझते है, और उनको भी महसूस करने नहीं देते है ।

सामाजिक कौशल शिक्षा में दैनिक जीवन में इस्तमाल करनेवाले उपकरणों को लेकर जानकारी देना है । उनके अनुकूल शयन कक्षा, रसोईघर स्नानगृह या शौचालय आदि बनाना अवश्यक है । गतिशील होने के लिए स्टिक या व्हिलचेर या वाकर आदि का उपयोग करना अवश्यक है । आवाज आउट्पुट या आडियो टेप डिवाइज से काफ़ी मदद मिल सकती है। नेत्रहीन बच्चों को श्रवण और स्पर्श द्वारा पहचान कराना अवश्यक है । जैसे कि चलने की कदमों की आहट, या कक्षा में स्थित अलग-अलग लंबाई चौडाई या छ्त या दीवार की ऊंचाई प्रत्येक स्थान को योग्य द्वनि से आहट कराना है । स्पर्श के माध्यम से दीवारों का नरम या खुरदरापन या अलग-अलग इकाइयों से परिचय करना दीवारों के डिजाइन, या संचार करने में भागीदार उपकरणों से स्पर्श के माध्यम से जानकारी देना है ।

अभिभावक भले ही संस्थानों पर बच्चों को छोडते है पर वहाँ रहनेवाले हर एक बच्चे का आशय यही रहता है कि वे जरूर कुछ हासिल करेंगे । सरकार की सहायता तथा सरकारी उद्योग तथा आरक्षण या संघ संस्थानों में भी उनको किसी भी प्रकार

उद्योग मिलने की उम्मीद रखते है । हर एक बच्चा कामयाब होने का सपना देखता रहता है । दुनिया में ऐसे काफ़ी नेत्रहीन साधक है जो अनेक सरकारी गैर सरकारी नैकरियाँ तथा संस्थानों में कर्यरत है और बहुत ही सक्षमता से वे अपना कार्य निर्वाह करते है । काफ़ी लोग अपने आप को सामान्य लोगों के बराबर ही समझते है ।

उपसंहार -चक्षुहीन लोगों की आज की स्थिति में काफ़ी सुधर गया है । सरकारी सुविधाओं का उपयोग करते हुए पारिवारिक सहारे के साथ वे अपने बलबूते पर खडे होने में सक्षम है । आधुनिक संसाधन भी नेत्रहीनों के जीवन निर्माण में काफ़ी मददगार है । अफ़सोस की बात है आज भी कुछेक नेत्रहीनों को ट्रेन -बस या ट्राफ़िक सिग्नल पर घूमते मदद माँगते दिखाई देते है । शोचनीय बात है कि आज भी कई जगहों में गाना गाते एक दूसरे का सहारा लेते हुए नेत्रहीन हमें मिलते है । इसके विपरीत सभी तरह सरकारी या गैरसरकारी संस्थाओं का उपयोग कर साधना की ओर अग्रसर अनेक नेत्रहीन हमारे लिए एक उदाहरण है । नेत्रहीन बच्चों की विविध अवश्यकतएँ तथा सरकारी योजनाएँ सफ़लता पूर्वक उन तक पहुँचने में अभी अनेक रूप से कार्यारंभ होना चाहिए । सरकारी या संस्थाओं की योजनाएँ ऐसे बच्चे को सक्रीय तथा उत्पादक सदस्य के रूप में तैय्यारी करने में सहायक बनना है । नेत्रहीनों का साहस, उत्साह और असीम आत्मविस्वास आम लोगों के लिए भी प्रेरणादाई है ।